



चूत और लण्ड का एक ही रिश्ता- 8

“बेटी पापा Xxx कहानी में मेरे पापा ने मेरे उकसाने पर मुझे रात के अँधेरे में सुनसान सड़क पर चोद दिया. इस चुदाई का मजा लेने के लिए मुझे कितने जतन करने पड़े. ...”

Story By: गरिमा सेक्सी (garimaasexy)

Posted: Sunday, December 17th, 2023

Categories: [बाप बेटी की चुदाई](#)

Online version: [चूत और लण्ड का एक ही रिश्ता- 8](#)

चूत और लण्ड का एक ही रिश्ता- 8

बेटी पापा Xxx कहानी में मेरे पापा ने मेरे उकसाने पर मुझे रात के अँधेरे में सुनसान सड़क पर चोद दिया. इस चुदाई का मजा लेने के लिए मुझे कितने जतन करने पड़े.

यह कहानी पढ़ें.

Beti Papa Xxx Kahani

कहानी के सातवें भाग

पापा ने मेरी चूत चाटी सड़क पर

में आपने पढ़ा कि सुनसान सड़क पर बंद रेलवे फाटक के पास पापा ने मेरी नंगी चूत चाट कर मुझे खूब मजा दिया.

अब आगे बेटी पापा Xxx कहानी :

मैं जान रही थी कि अगर मैं इस तरह पापा के झड़ जाने के बाद खड़ी हो गई तो आज चूत में लंड लेने का सपना अधूरा रह जाएगा और फिर चूत चुदवाने के लिए मुझे दोबारा कोई दूसरा प्लान बनाना पड़ेगा।

वहीं मेरी चूत में फिर से खुजली शुरू हो चुकी थी जो अब लंड से ही शांत होने वाली थी।

इसीलिए जब पापा थोड़े नॉर्मल हुए तो मैंने उनके ढीले पड़ चुके लंड को दोबारा चूसना शुरू कर दिया.

पापा भी मजे से दोबारा कमर हिला-हिला कर लंड चुसवाने लगे.

उधर ट्रेन आने में भी टाइम लग रहा था ।

करीब 2 मिनट तक लंड चुसाई के बाद ही पापा का लंड दोबारा होकर टाइट खड़ा हो गया ।
फिर कुछ देर और लंड को चूसने के बाद मैंने लण्ड को मुँह से निकाला और उसे हाथ से
पकड़ कर हिलाने लगी और खड़ी हो गई ।

मैं अभी तक लंड को हाथ से पकड़े हुई थी ।

मेरी चूत एकदम पनिया चुकी थी और मुझ पर दोबारा मदहोशी छाने लगी थी.

मैं थोड़ा आगे बढ़ कर करीब-करीब उनसे सट कर खड़ी हो गयी और उनके लंड को पकड़
कर सामने से ही अपनी चूत से रगड़ने लगी ।

कुछ देर ही रगड़ने के बाद मेरी हालत खराब होने लगी ।

मैंने लंड को चूत से रगड़ा छोड़ दिया और पापा की तरफ पीठ कर के खड़ी हो गई और फिर
अपने दोनों हाथों को स्कूटी पर टिका दिया और अपनी गांड को उचका कर झुक गई ।

अब मैं पापा को चुदाई का खुला निमंत्रण दे रही थी.

तो पापा भी आगे बढ़े और अपने हाथ को मेरी कमर पर रखा और दूसरे हाथ से अपने लण्ड
को पकड़ कर सीधा मेरी चूत पर रख दिया ।

पापा का गर्म-गर्म लंड अपनी चूत के मुँह पर महसूस करके ही इतनी एक्साइट हो गई थी
कि लग रहा था कि कहीं मेरी चूत पानी ना छोड़ दे ।

मैं तो एकदम जन्नत में थी.

तभी पापा ने मेरी कमर को अपने दोनों हाथों से तेजी से पकड़ा और एक जोरदार धक्का
मारा.

एक ही धक्के में उनका लंड मेरी गीली चूत में जड़ तक चला गया ।

मेरे मुंह से तेज सिसकारी निकली- आआ आआअह्ह ह्हह ... पाप्पप्पाआआ !
तभी उधर से ट्रेन का हॉर्न भी सुनाई देने लगा ।

आवाज दूर से आ रही थी ... मतलब ट्रेन आने वाली थी.

उधर पापा ने लंड को मेरी चूत में अंदर बाहर कर चुदाई शुरू कर दी.
इधर ट्रेन की आवाज पास आती जा रही थी ... उधर पापा भी अपनी कमर की स्पीड
बढ़ाकर मुझे चोदे जा रहे थे ।

मेरे मुंह लगातर हल्की-हल्की सिसकारी निकल रही थी ।

अब मेरी बर्दाश्त की सीमा खत्म हो चुकी थी और मैं खुद अपनी गांड तेजी से उचका कर
पापा का लंड अपनी चूत में लेने लगी.

और अचानक मेरे मुंह से तेज सिसकारी निकली- आआआ आआआआ आआ आआ आआ
आआ ... बस्स्स !
और मेरी चूत ने पानी छोड़ दिया ।

मैं निढाल होकर होकर स्कूटी पर सिर रखकर हांफने लगी ।

पापा अभी तक नहीं झड़े थे ... उनका पत्थर जैसा कड़ा लंड अभी भी मेरी चूत में ही था ।

हालांकि मेरे झड़ जाने पर पापा ने कुछ देर के लिए चोदना रोक दिया ।

ट्रेन की आवाज भी एकदम पास आ गई थी.

जब पापा को लगा कि मैं अब थोड़ा नॉर्मल हो गई हूं तो उन्हें एक बार फिर कमर को हिला

कर चौदना शुरू किया.

मगर कुछ ही देर बाद अचानक उन्हें अपना लंड मेरी चूत से बाहर निकाल लिया।

वे अभी तक झड़े नहीं थे ... तभी मैं जान गई कि पापा का क्या इरादा है.

पापा ने अपनी उंगलियों से मेरी गांड के छेद पर कुछ चिकना सा लगाया और फिर लंड को मेरी गांड के छेद पर रख दिया था.

उनका लंड मेरी चूत के पानी से पूरी तरह गीला था.

उसके बाद भी शायद उनको अपने थूक से मेरी गांड के छेद को चिकना किया था.

पापा ने अपने लंड को मेरी गांड के छेद पर टिकाया, थोड़ी देर दबा कर खड़े रहे.

इतनी देर में ट्रेन धड़धड़ाते हुए आ गई ... मालगाड़ी थी जिसकी स्पीड ज्यादा नहीं थी.

उधर पापा ने मेरी कमर को पकड़ लिया और एक जोरदार धक्का मारा.

और उनका आधा लंड मेरी गांड में घुस गया।

मेरे मुंह से थोड़ा तेज सिसकारी निकल गई मगर ट्रेन की आवाज में दब गई।

फिर थोड़ा रुक कर पापा ने धक्के मारने शुरू किए और पूरा जड़ तक अपने लंड को डाल कर मेरी गांड मारने लगे।

उधर ट्रेन की आवाज के साथ उनके कमर के धक्के बढ़ते जा रहे थे।

माहौल इतना सेक्सी हो रहा था कि जिसे बयान करना मुश्किल है।

मैं भी कमर हिला-हिला कर अपनी गांड मरवाने लगी.

गांड मारते हुए अभी 1-2 मिनट होंगे कि अचानक पापा के मुंह से सिसकारियां निकलने

लगीं- आआ आआअह्ह ह्हहह ... बेटाआआ ... आआ आआआ आआ !

और फिर वे तेजी से धक्का देते हुए मेरी गांड में ही झड़ गए.

पापा मेरी पीठ पर अपने सर को रख कर हांफ रहे थे ... उनका लंड अभी भी मेरी गांड में घुसा हुआ था ।

कुछ देर बाद जब वे सामान्य हो गया तो उठे और अपने लंड को मेरी गांड से निकाल लिया.

बेटी पापा Xxx के बाद मैं भी सीधी खड़ी हो गई.

फिर हम दोनों ने अपने कपड़े पहने.

ट्रेन भी गुजर चुकी थी ... गेट खुल गया था ... इधर हम दोनों बाप-बेटी का काम भी पूरा हो गया था ।

पापा ने स्कूटी स्टार्ट की ... मैं उनके पीछे बैठ गई ... पापा बिना कुछ बोले स्कूटी को मोड़ें और घर की तरफ चल दिए ।

स्कूटी पर बैठने पर मेरी चूत और गांड में मीठा-मीठा दर्द हो रहा था ।

मैं अपने हाथ को पापा कमर के चारों ओर लपेट कर फिर उसी तरह अपनी चूची को पापा की पीठ से चिपका कर बैठ गई ।

अचानक मेरा हाथ आगे लुंगी के नीचे पापा के लंड से टच कर गया, उनका लंड ढीला था ।

मुझे अचानक शरारत सूझी मैंने पीछे-बैठे ही उनके लंड को मुट्ठी में भर लिया और रास्ते भर हिलाती हुई आई.

और घर पकड़ते-पहुंचते पापा का लंड दोबारा खड़ा हो गया ।

पापा ने स्कूटी खड़ी की और मुझसे बोले- किताब के बारे में मैं क्या कहूंगा ?

मैं हल्का सा मुस्कुराती हुई बोली- उसका इंतजाम मैंने कर रखा है.

फिर मैंने स्कूटी की चाबी ली और सीट के अंदर से पॉलिथीन में एक किताब निकाली और बोली- मैंने दिन में ही लाकर इसे रख दिया था ।

पापा भी मुकुराने लगे ।

इसी बीच पापा अपने तीसरी बार खड़े हो चुके लंड को अपनी लुंगी और कुर्ते में छुपाने की कोशिश कर रहे थे ।

चूंकि पापा अंदर अंडरवियर नहीं पहनने थे इसलिए उनका खड़ा लंड कुर्ते के नीचे साफ़ पता चल जा रहा था.

मेरी निगाह जैसे ही उधर गई मैं हल्का सा मुस्कुरा दी और पापा भी थोड़ा शरमा गये ।

हम दोनों गेट के अंदर आ चुके थे मगर अभी घर में नहीं गये थे बाहर लॉन में एकदम अँधेरा था ।

मैं और पापा बाहर बारामदे में आकर खड़े हो गए ।

पापा धीरे से मुझसे बोले- तुम अंदर चलो, मैं अभी थोड़ी देर में आता हूँ ।

मैं समझ गई कि पापा लंड के ढीले होने का इंतजार कर रहे हैं ।

खटखटाने पर मम्मी जैसे ही दरवाजा खोलेंगी तो उनका ध्यान उधर जा सकता है.

यही सोचकर पापा अंदर जाने में डर रहे थे ।

मुझे भी यही डर था कि मम्मी की निगाह पापा के खड़े लंड पर जा सकती है ।

फिर भी मैंने उन्हें चिढ़ाते हुए धीमे से कहा- नहीं साथ ही चलेंगे अंदर !

पापा जोर देते हुए बोले- अरे बोल रहा हूं ना मैं अभी नहीं जा सकता ... तुम जाओ !

इस पर मैंने कुर्ते के ऊपर से उनके खड़े लंड पर धीरे से हाथ से मारा और हंसते हुए धीमे से बोली- इसे नीचे करिये और चलिए अन्दर !

पापा थोड़े खिसियाते हुए बोले- मैं क्या करूं ... तुम्हीं ने तो किया है ये रास्ते में !

तब मैंने उनके लंड को कुर्ते के ऊपर से ही मुट्ठी में पकड़ लिया और हंसते हुए धीमे से बोली- अच्छा ठीक है, मैंने ही ये किया है तो मैं ही इसे ठीक भी करती हूं.

अब तक मेरे दिमाग में एक नया प्लान बन चुका था ... बरामदे की लाइट नहीं जल रही थी इसलिए वहां और भी अंधेरा था ।

लॉबी की एक खिड़की जो बरामदे में खुलती थी वे थोड़ी सी खुली हुई थी ।

मैं धीरे से खिड़की के पास गई और चोरी से अंदर झांका तो देखा कि मम्मी रसोई में काम कर रही हैं और नानी सोफे पर बैठ कर टीवी देख रही हैं ।

चूंकि नानी थोड़ा धीमा सुनती थीं तो टीवी का वॉल्यूम काफी तेज था ।

उन लोगों को अभी नहीं पता चला था कि हम आ गए हैं.

मैंने टाइम देखा तो रात के 9 बजे चुके थे ।

मुझे पता था कि मम्मी को रसोई में अभी करीब आधा घंटा और लगेगा ।

तभी पापा भी मेरे पीछे आकर धीरे-धीरे झांक कर अंदर देखने लगे ।

शायद वे देखना चाहते थे कि मम्मी क्या कर रही हैं।

जैसे ही पापा मेरे पास आये मैंने उन्हें चुप रहने का इशारा किया और किताब उन्हें पकड़ा दी.

मैंने उन्हें हाथ से धीरे से दीवार की तरफ धकेला जिससे ठीक खिड़की के बगल की दीवार से चिपका कर खड़े हो गए.

फिर उन्हें वहीं खड़े रहने का इशारा किया।

चूंकि बरामदे में एकदम अँधेरा था तो बाहर से वैसे भी कुछ दिखाई नहीं देने वाला था।

मैं पापा के बगल में आकर खिड़की से सट कर ऐसे खड़ी हो गई कि मुझे अंदर दिखाई देता रहा.

फिर मैंने अपना एक हाथ पापा के कुर्ते के नीचे डाल दिया।

तब मैंने महसूस किया कि उनका लंड खड़ा होने की वजह से पहले से ही लुंगी के बाहर था।

मैंने थोड़ा और एडजस्ट कर लिया उनके लंड को मुट्ठी में भर कर उसकी चमड़ी को आगे-पीछे कर खड़े-खड़े ही मुठ मारने लगी।

पापा थोड़े घबराते हुए मेरे हाथ को हल्का सा पकड़ते हुए धीमे से बोले- अरे बेटा, यहां मत करो, फर्श गंदा हो गया तो दिक्कत हो जाएगी।

दरअसल पापा डर रहे थे कि कहीं उनके लंड का पानी निकल कर फर्श पर गिर ना जाए।

मैंने उंगली से चुप रहने का इशारा करते हुए कहा- कुछ नहीं होगा, आप चुपचाप खड़े रहिए!

थोड़ी देर इस तरह हाथ से पापा का लंड हिलाने के बाद मैंने हाथ हटा लिया और उनसे खिड़की की तरफ इशारा करते हुए धीमे से उनसे कहा- यहां से अंदर ध्यान दिए रहिएगा.

अभी पापा कुछ समझ पाते ... तभी मैं घूम कर उनके सामने आ गई और घुटनों के बल नीचे बैठ गई और उनके कुर्ते को ऊपर उठा कर मैंने अपना सिर कुर्ते के अंदर कर लिया, जिससे उनके कुर्ते से मेरा सर ढक गया।

फिर मैंने एक हाथ से लंड की चमड़ी को पूरा पीछे खींच दिया और सुपारे को मुंह में लेकर चूसने लगी।

मैं जान रही थी कि अबकी बार देर तक लंड चूसने को मिलेगा क्योंकि पापा पहले ही 2 बार झड़ चुके हैं तो तीसरी बार में वे थोड़ी देर से झड़ेंगे।

वैसे भी लंड को चूसने में मुझे बहुत मजा आता था इसलिए मुझे उनके देर से झड़ने में कोई दिक्कत भी नहीं थी।

वहीं इस तरह घर में मम्मी से छुपकर पापा के लंड को चूसना मुझे और उत्तेजित कर रहा था।

अब इस बेटी पापा Xxx खेल में पापा को भी मजा आने लगा था।

उन्होंने कुर्ते के ऊपर से ही अपना एक हाथ मेरे सिर पर रख दिया था और मजे से अपनी कमर हल्का-हल्का हिलाते हुए लंड चुसवा रहे थे।

इसी तरह करीब 8-10 मिनट तक लगातर लंड चूसने के बाद पापा तेजी से अपनी कमर हिलाने लगे.

मैं समझ गई कि अब वे झड़ने वाले हैं।

तो मैं भी तेजी से सर को आगे-पीछे कर लंड चूसने लगी.

फिर अचानक पापा अपनी कमर को तेज झटका देते हुए मेरे मुंह में लंड का सारा पानी निकाल दिया।

मैं भी लंड को तब तक मुंह में लेने के लिए चूसती रही जब तक लंड का एक-एक बूंद पानी नहीं पी लिया।

लण्ड से दो बार पहले भी पानी निकल चुका था तो इस बार बस थोड़ा ही पानी निकला जिसे मैं पूरा पी गयी।

कुछ ही देर में पापा का लंड ढीला हो गया था ... उसके बाद मैंने लंड को मुंह निकाला और पापा की लुंगी से ही मुंह को पौँछा और खड़ी हो गई।

पापा की सांसें अभी भी तेज चल रही थीं ... जैसे कहीं से दौड़ कर आ रहे हों।

मैंने धीमे से पापा से कहा- देखा, फर्श भी गंदा नहीं हुआ और काम भी हो गया।

अब मैं और पापा एक-दूसरे से इतने खुल चुके थे कि हमारी बातों से ऐसा लग ही नहीं रहा था कि मैं और वे बाप-बेटी हैं।

इस पर पापा मुस्कुराते हुए मेरी चूचियों की तरफ देखते हुए बोले- एक काम तो बचा है अभी भी!

मैं समझ गयी कि पापा चूचियों को चूसने की बात कर रहे हैं।

मैंने आँख मारते हुए कहा- अरे, कुछ रात के लिए भी छोड़ दीजिए।

पापा मुस्कुरा दिये।

फिर हमने दरवाजा नाँक किया मम्मी दरवाजा खोल कर फिर से रसोई में चली गयी.

मैं अपने कमरे में और पापा अपने कमरे में!

तो दोस्तो, कैसी लगी मेरी यह बेटी पापा Xxx कहानी ?
मुझे ज़रूर बताइयेगा ।

कहानी में आगे और भी मजेदार किस्से और मोड़ हैं ... थोड़ा इंतज़ार कीजिए.

Other stories you may be interested in

मामा से परेशान मामी को प्यार से चोदा

इंडियन लेडी सेक्स कहानी में मैंने अपनी भोली सीधी सादी मामी को प्यार जता कर चोदा. मेरी मामी देसी ब्यूटी थी. लेकिन मामा उनसे दुर्व्यवहार करते थे. दोस्तो, कैसे हैं आप सब ... आशा करता हूं कि आप सब ठीक [...]

[Full Story >>>](#)

भाई से चूत चटवा कर शांति मिली

गरम चूत का इलाज मेरे भाई ने मेरी चूत चाट कर सड़क किनारे की झाड़ियों में! पापा के दोस्त की गोद में बैठ कर उनका लंड मेरी गांड में चुभने से मैं गर्म हो गयी थी. यह कहानी सुनें. मेरी [...]

[Full Story >>>](#)

पापा के साथ मिलकर मौसी की चुदाई

खेत चुदाई देसी मौसी की मैंने और मेरे पापा ने एक साथ की. यह पूरी योजना मौसी की ही बनाई हुई थी. वह एक साथ दो लंड से चुदाई का मजा लेना चाहती थी. मेरा नाम प्रशांत है. आपने मेरी [...]

[Full Story >>>](#)

पापा के दोस्त के साथ मस्ती- 2

ठरकी अंकल के घर में आ गयी मैं अपने भाई और सहेली को लेकर ... वे दोनों आपस में चुदाई करना चाहते थे और हमारे पास कोई जगह नहीं थी. इसी के साथ मेरी सेटिंग भी हो गयी अंकल के [...]

[Full Story >>>](#)

होली की मस्ती की रंग बिरंगी तितलियाँ

Nude Holi Sex Pics

[Full Story >>>](#)

